अध्याय– तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय– तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रकिया

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है, वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी विशिष्ट प्रकिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है । अनुसंधान प्रश्न करना, जाँच, गहण निरीक्षण, योजनाबद्ध अध्ययन व्यापक परीक्षण और तत्परता युक्त उद्देश्य सामान्यीकरण प्रकिया सन्निहित होती है।

D - 362

पी.वी. युग के शब्दों में –

अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिनके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है तथा उनके उन अनुकर्मों, पारस्परिक संबंधों कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है, जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते है।

शोध अभिकल्प – प्रस्तुत शोध अध्ययन में ***वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि*** का प्रयोग किया गया ।

वर्णनात्मक शोध वैसे शोध को कहा जाता है, जिसमें वर्तमान हालातों को लिखित रूप में संग्रहित किया जाता है, विश्लेषण किया जाता है तथा उसकी व्याख्या की जाती है । ऐसे शोध में मूल रूप से 'क्या है' का वर्णन करता है ।

वर्णनात्मक अनुसंधान के उद्देश्य–

1. वर्तमान परिस्थितियों को पहिचानना एवं वर्तमान परिस्थितियों को केन्द्रित करना।
2. विषय या घटना की स्थिति का शीध्र अध्ययन करना ।
3. तथ्यों तथा प्रदत्तों को प्राप्त करना।
4. गुणों तथा विशेषताओं के सम्बन्ध का निरीक्षण करना ।

3.2 न्यादर्शः न्यादर्श पद्धति अनुसंधान की वह पद्धति है, जिसमें अनुसंधान विषय के अंतर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या से सावधानीपूर्वक कुछ

इकाईयों को चुना जाता है, जो सम्पूर्ण जनसंख्या की आधारभूत विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती है ।

करलिंगर – न्यादर्श सम्पूर्ण जनसंख्या में से सम्पूर्ण जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते है।

गुडे एवं हॉट – एक न्यादर्श जैसा कि नाम से ही किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है, अतः यह कह सकते है, कि न्यादर्श अपने सम्पूर्ण समूह का एक छोटा चित्र होता है।

3.3 न्यादर्श चयन –

किसी की अनुसंधान कार्य में प्रतिदर्श का चुनाव एवं उसकी संख्या महत्वपूर्ण पहलु होता है । प्रस्तुत अध्ययन में समय सीमा का ध्यान रखते हुए प्रतिदर्श को उद्देश्यपूर्ण प्रकार से चयनित किया गया एवं इसमें शोधकर्ता ने भोपाल के दो विद्यालयों को शोध के लिए चयनित किया गया ।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने प्रतिदर्श का चयन ***स्तरित यादृच्छिक विधि*** से किया गया है इसके अन्तर्गत भोपाल के दो विद्यालयों से कक्षा 11वीं के 180 विद्यार्थियों को चयनित किया जिसमें विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को सम्मलित किया गया है।

प्रतिदर्श में कुल 180 विद्यार्थी थे जिसमें से 90 शासकीय विद्यालय तथा 90 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थी थें । इसी प्रकार संकायों के आधार पर विज्ञान संकाय के 30, गणित संकाय के 30, तथा वाणिज्य संकाय के 30 विद्यार्थी थे।

3.1 प्रतिदर्श सारणी (संकायों के आधार पर विद्यार्थीयों की संख्या) –

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	विज्ञान	गणित	वाणिज्य	कुल
1	शासकीय कन्या उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, जांहगीराबाद, भोपाल	30	30	30	90
2	नालन्दा को–एड हायर सेकेण्डरी स्कूल कोलार, भोपाल	30	30	30	90
	कुल योग	60	60	60	180

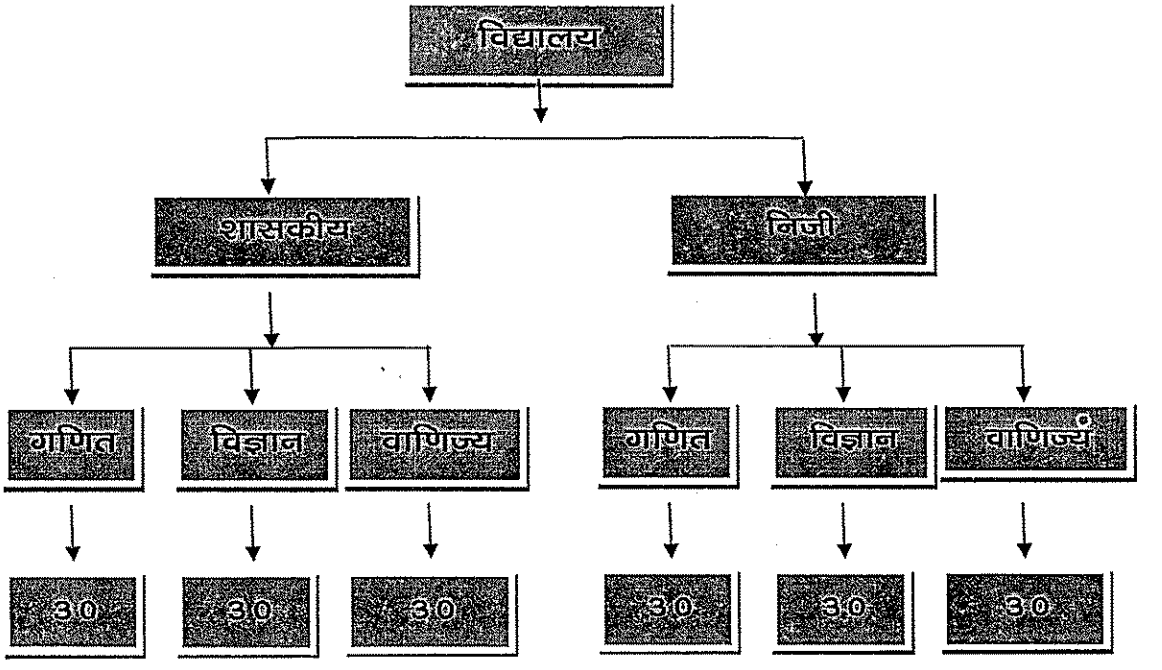

3.4 शोध मे प्रयुक्त चर :–

- शैक्षिक आकांक्षा
- विद्यालय प्रबंधन
- लिंग
- शैक्षणिक श्रेणी
- संकाय
- अभिभावक का व्यवसाय
- अभिभावक की मासिक आय

जिस गुण विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना शोधकर्ता का उद्देश्य होता है उसे चर कहते हैं।

चर . जैसा कि नाम से ही बहुत कुछ स्पष्ट है, जिसका मान परिवर्तित होता रहता है ।

डीएमैटो के अनुसार – किसी प्राणी, वस्तु या चीज़ के मापने योग्य गुणों का चर कहा जाता है ।

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरण –

शोध कार्य को करते समय वैज्ञानिक विधि से नवीन प्रदत्तों को संकलित करने हेतु कुछ मानकीकृत उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन बहुत महत्वपूर्ण है

शोधकर्ता ने उपयुक्त बिन्दुओं का ध्यान में रखते हुए निम्न उपकरणों का उपयोग किया जो निम्न प्रकार से है ।

1. **शैक्षिक आकांक्षा – डॉ. एस.के.सक्सेना**

विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा मापने के लिए डॉ. एस.के. सक्सेना द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों के विषय चयन तथा सामाजिक पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए स्वनिर्मित व्यक्तिगत जानकारी प्रपत्र का उपयोग किया गया ।

शैक्षिक आकांक्षा मापनी का **विश्वसनीयता** गुणांक .86 एवं आदर्शवाद और वास्तविकता के मध्य .69 है।

इस परीक्षण का **वैधता** गुणांक .86 है, एवं हैलर तथा मिलर के शैक्षिक आकांक्षा मापी का वैधता गुणांक .84 है।

3.6 प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया :–

शोधकर्ता ने आँकड़ों का संकलन करने के लिए विद्यालयों में पहुँचकर प्राचार्यो को अपना परिचय दिया एवं उन्हें अपने शोध कार्य से अवगत कराया उनसे अनुमति प्राप्त कर निर्धारित समय पर विद्यालय पहुंच कर विद्यार्थियों से सम्पर्क स्थापित किया और उनको अपना स्वयं का एवं अपने शोध कार्य का संक्षिप्त परिचय दिया इसके पश्चात् विद्यार्थियों को दोनों उपकरण वितरित कर निर्देश दिए गये जो निम्नानुसार है–

1. यह परीक्षण आपके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित नहीं है।
2. यह आपकी विभिन्न आकांक्षाओं से संबन्धित है।
3. इस परीक्षण में आठ प्रश्न है।
4. प्रत्येक प्रश्न में दस विकल्प उत्तर के रूप में दिये गये है ।
5. आपकों इनमें से किसी एक पर अपनी आकांक्षा के अनुसार सही का चिन्ह लगाना है।
6. सभी प्रश्न अनिवार्य है किसी भी प्रश्न का न छोड़ें।
7. आपको सर्वप्रथम पृष्ठ पर दी गयी औपचारिकताओं (जैसे नाम, कक्षा, आयु आदि) को भरना है।
8. इनमें से कोई भी उत्तर गलत नही है ।
9. आपकी यह जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जायेगी ।

3.7 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर जानने के लिए वर्णनात्मक संख्यिकीय **(मध्यमान, प्रतिशत)** का प्रयोग किया। तथा विद्यालय प्रबन्धन विद्यार्थियों की शैक्षणिक श्रेणी तथा लिंग के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा में आकांक्षा का अंतर जानने के लिए **'टी' परीक्षण** का प्रयोग किया तथा अभिभावको के व्यवसाय एवं मासिक आय के आधार पर अंतर देखने के लिए **'एफ' परीक्षण** का प्रयोग किया गया।